एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

कृषि का आधार: जैविक खेती

(*आयुष कुमार शर्मा, अनिल यादव एवं नरेंद्र चौधरी)
राजा बलवंत सिंह कॉलेज, बिचपुरी, आगरा-283105, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: meaks0708@gmail.com

कार्बनिक खेती किसानो के लिए कोई नई पहल नहीं है बल्कि कीटनाशकों एवं रसायनों के चलन में आने से पहले वर्षो पूर्व खेती का समायोजित तरीका अपनाया जाता था, जिसे ही आज हम जैविक खेती या कार्बनिक खेती के रूप में जानते है। वर्तमान खाद्य तंत्र पर्याप्त मात्रा में खाद्य उत्पादन करने में तों सक्षम है परन्तु गुणवत्ता में इसकी सीमा अभी तक सीमित ही है। आज पूरे विश्व में रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से मिले भोजन पदार्थो की गुणवत्ता को लेकर व्यापक बहस छिड़ी हुई है। कई देशों में खेती में रसायन के उपयोग को कम करने के लिए नये नियम बनाये जा रहे है। रासायनिक खेती के दुष्परिणामों से चिंतित किसानों एवं उपभोक्ताओं द्वारा रसायन विहिन खेती की नई परम्परा का जन्म हुआ है।

आजकल वृहत स्तर पर की गई पारम्परिक खेती, जिसमें कि गहन रूप से एक शस्यक्रम और पंक्ति में बोने जैसे शस्य क्रियाऐ शामिल है, मृदा अपरदन तथा अपवाह एक कारण है, जिसके फलस्वरूप मृदा में पोषक तत्वों की हानि होती है। अम्लीय उर्वरकों, क्षारीय तत्वों, लवणता और कैल्शिकरण से होने वाली क्रियाऐ प्रत्यक्ष रूप से मृदा के पी.एच. स्तर, पूरी तरह घुलनशील क्षारों, जैविक कार्बन, धनायन विनिमय क्षमता और विनिमय आधार को प्रभावित करती है। प्रतिकूल रासायनिक परिवर्तन भी मृदा अपरदन, मृदा संघनन, पपड़ीपन, रन्ध्रावकाश और अंतस्पदन क्षमता को प्रभावित करते है। अपरदन से हुए तलछट तलीय जलस्तर को दूषित करने का यह एक बहुत बड़ा कारक है। कीटनाशकों के प्रयोग और अपवाह के कारण भूमिगत जल में प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है। रासायनिक कीटनाशकों के दुरूपयोग से नाशी जीवियों में भी कीटनाशकों के प्रति प्रतिरोधकता उत्पन्न हो गई है। रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग के कारण वर्तमान में खाद्य आवश्यकता की पूर्ति तो हुई, परन्तु बहुत सी अनदेखी समस्याए भी खड़ी हई है।

वास्तव में जैविक खेती वही है जो कि हमारी मिट्टी और जलवायु के अनुसार हो और हमारे पास उपलब्ध संसाधनों द्वारा हो तथा जिसमें सभी आदानों का सदुपयोग हो ताकि वे लम्बे समय तक उपलब्ध हो सके। जैविक खेती अपनाने के लिए सबसे पहले हमें अपनी परम्पराओं और पुराने खेती के तरीकों को एक बार पुनः समझना होगा और उसमें विज्ञान के उपलब्ध अच्छे ज्ञान को शामिल कर उसकी उत्पादकता बढ़ानी होगी।

जीवित वस्तु ही जीवन दे सकती है। वर्तमान में कृषि भूमि रासायनिक उर्वरकों जैसे यूरिया, डीएपी, अमोनियम सल्फेट आदि से क्षतिग्रस्त हो चुकी है और उसमें पैदा होने वाला अन्न, सब्जियां, फल इत्यादि जहरीला होता है। अतः सबसे पहला काम कृषि भूमि को जीवित करना है। उसके लिए इन सब रसायनों को कम करना होगा। किसान भाईयों को भी धैर्य से काम लेना होगा। फसल कमजोर होने पर जैविक खाद का प्रयोग व कीडा लगनें पर जैविक नियंत्रण शुरू करना पड़ेगा। यहां मुख्य बात खेती के साथ–साथ हमारे मन को बदलने की है और यह विश्वास पैदा करने की है कि रसायनिक उर्वरक और कीटनाशकों की बजाय और भी अनेक सफल तरीके है जिनसे उत्पादन बढ़ता है और हवा पानी मिट्टी लम्बे समय तक उपज देने में सहायक होते है।

जैविक खेती कृषि की वह पद्धति है जिसमें पर्यावरण को स्वच्छ व प्राकृतिक संतुलन को कायम रखते हुऐ भूमि की सजीवता, पानी की गुणवत्ता, जैव विविधता आदि को बनाये रखा जाता है तथा पर्यावरण को प्रदुषित किये बिना दीर्घकालीन व स्थिर उत्पादन प्राप्त किया जाता है। जैविक खेती करना किसान के लिए कोई नई तकनीक नहीं है बल्कि वह है जो प्राचीन समय से की जा रही है। रासायनिक पदार्थो के प्रयोग को छोडकर प्राकृतिक संसाधनों, वानस्पतिक पौध, जैव पदार्थो का उपयोग करना ही जैविक खेती का मुख्य कार्य है। रासायनिक खेती में प्रयुक्त समस्त सामग्री का जैविक खेती में विकल्प मौजूद है जैसे कि रासायनिक खाद–यूरिया, डीएपी, सुपर की जगह रॉक फॉस्फेट, जिप्सम, अरण्डी की खली, नीम की खली आदि का प्रयोग कर सकते है। रासायनिक दवाईयों के स्थान पर गोमूत्र, छाछ, नीम तेल, महुआ, आक, लेन्टाना केमरा, करंज, लहसुन, मिर्च इत्यादि का इस्तेमाल कर सकते है। अनेक तरह के लाभदायक जीवाणु स्वयं ही अपना परिवार उचित स्तर तक बनाये रखते है, किन्तु खेती में हमने रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से इन्हें खत्म ही कर दिया है। अतः कम लागत मे इन जीवाणुओं की सख्या बढ़ाना ही खेती के लिए आवश्यक है। ये जीवाणु पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराने के अलावा कई प्रकार के हार्मोन्स व रसायन भी छोड़ते है। जैविक खेती किसान और गांव की आत्मनिर्भरता के नियम पर आधारित है। सबसे पहली बात रसायनिक खेती से पैदा हुई मानसिकता को बदलना और विश्वास पैदा करना होगा कि विज्ञान की प्रकृति मित्र तकनीक का प्रयोग का भी अच्छा उत्पादन लम्बे समय तक हो सकता है। सबसे पहले कृषक उसके यहां उपलब्ध जैविक सामग्री की पहचान करें, उसे उपयोग में लाने लायक बनाए। सदैव यह ध्यान रखना चाहिए की लागत अधिक न हो किन्तु कम लागत का अर्थ गुणवत्ता से समझौता नहीं है। जैविक खेत के चारो और वृक्षों के वायुरोधक वृक्ष एवं खेत के चारो और मेढ़बन्दी करे।